पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 16.11.2023 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें या 9810117464 पर Paytm कर दें। – अनिल आर्य

वर्ष-40 अंक-12 मार्गशीर्ष-2080 दयानन्दाब्द 200 16 नवम्बर से 30 नवम्बर 2023 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.11.2023, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में महर्षि दयानंद बलिदान दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानंद ने वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

बाएं से पार्षद योगेश वर्मा, पूर्व विधायक डॉ महेंद्र नागपाल, पार्षद विकेश सेठी व विधायक अखिलेश त्रिपाठी का अभिनंदन करते ओम सपरा, यशोवीर आर्य, जीतेन कोहि, गवेंद्र शास्त्री, यश पाल आर्य आदि।

सोमवार 13 नवम्बर 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के 140 वें बलिदान दिवस पर आर्य समाज डेरावाल नगर दिल्ली में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानंद ने वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया और लोगों की सोचने समझने की दिशा ही बदल डाली। वह महान क्रान्तिकारी थे उन्होंने बड़े ही साहस के साथ कुरीतियों व पाखंड पर कुठाराघात किया। स्वतंत्रता संग्राम में भी उनका उल्लेखनीय योगदान रहा स्वामी जी से प्रेरणा लेकर हजारों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। आज भी स्वामी दयानन्द जी के विचार प्रासंगिक है और उन्हें जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने समग्र क्रांति का शंखनाद किया और हर चीज को तर्क की कसौटी पर उतारने का मापदंड दिया।उन्हें वेदो वाला ऋषि भी कहा जाता है उन्होंने लुप्त हुए वेदों को जर्मनी से मंगा कर पुनर्स्थापित किया।स्वामी जी ने कहा कि कोई कितना ही करे पर 'स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम' है। फिरोजपुर पंजाब से पधारे गायक विजय आनन्द आर्य, पिंकी आर्य, नरेश खन्ना, दया आर्य, विजय पाहुजा, प्रवीण आर्य गाजियाबाद आदि ने मधुर गीत सुनाए । कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य अखिलेश त्रिपाठी ने यज्ञ करवा कर किया। आचार्य महेन्द्र भाई ने कुशल संचालन किया। समारोह की अध्यक्षता आर्य नेता ओम प्रकाश सपरा (प्रधान उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल) ने की व आर्य नेता अविनाश चुग ने आभार व्यक्त किया। प्रमुख रूप से विधायक अखिलेश त्रिपाठी, पूर्व विधायक डॉ. महेन्द्र नागपाल, पार्षद योगेश वर्मा, यशपाल आर्य, विकेश सेठी , हास्य योग गुरु जीतेन कोहि आदि उपस्थित थे। समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 15 महिलाओं को आर्य रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। आर्य नेता यशोवीर आर्य ,आचार्य गवेन्द्र शास्त्री रामकुमार आर्य, देवेन्द्र भगत ,सन्तोष शास्त्री, वेद प्रकाश आर्य, सुरेश आर्य डिम्पल भंडारी, सुषमा पाहुजा, अमर नाथ बत्रा आदर्श आहूजा, अमर सिंह आर्य, अरुण आर्य, सौरभ गुप्ता, भोलानाथ शास्त्री, सीमा ढींगरा आदि उपस्थित थे।

राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य का जन्मदिवस मनाया गया व गायक विजय आनन्द का अभिनन्दन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के जन्मदिन पर कार्यकर्ता भव्य अभिनंदन कर शुभकामनाये प्रदान करते हुए। द्वितीय चित्र मे फिरोजपुर से पधारे आर्य गायक विजय आनंद का अभिनंदन करते प्रवीन आर्य, सुदर्शन तनेजा, अंगद सिंह आर्य, यशपाल आर्य अनिल आर्य, माया राम शास्त्री, जीवन लाल आर्य ,वीरेंद्र आहूजा, शान्ति प्रकाश आर्य।

यज्ञ क्या होता है और कैसे किया जाता है

– मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कार्य वा कर्म को कहते हैं। आजकल यज्ञ शब्द अग्निहोत्र, हवन वा देवयज्ञ के लिए रूढ़ हो गया है। अतः पहले अग्निहोत्र वा देवयज्ञ पर विचार करते हैं। अग्निहोत्र में प्रयुक्त अग्नि शब्द सर्वज्ञात है। होत्र वह प्रक्रिया है जिसमें अग्नि में आहुत किये जाने वाले चार प्रकार के द्रव्यों की आहुतियां दी जाती हैं। यह चार प्रकार के द्रव्य हैं– गोधृत व केसर, कस्तूरी आदि सुगन्धित पदार्थ, मिष्ट पदार्थ शक्कर आदि, शुष्क अन्न, फल व मेवे आदि तथा ओषधियां वा वनस्पतियां जो स्वास्थ्यवर्धक होती हैं। अग्निहोत्र का मुख्य प्रयोजन इन सभी पदार्थों को अग्नि की सहायता से सूक्ष्मातिसूक्ष्म बनाकर उसे वायुमण्डल व सुदूर आकाश में फैलाया जाता है। हम सभी जानते हैं कि जब कोई वस्तु जलती है तो वह सूक्ष्म परमाणुओं में परिवर्तित हो जाती है। परमाणु हल्के होते हैं अतः वह वायु मण्डल में सर्वत्र वा दूर–दूर तक फैल जाते हैं। वायु मण्डल में फैलने से उनका वायु पर लाभप्रद प्रभाव होता है। जिस प्रकार दुर्गन्धयुक्त वायु स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद व मन के लिए अप्रिय होती है उसी प्रकार से गोघृत व केसर, कस्तूरी आदि नाना प्रकार के सुगन्धित द्रव्यों के जलने से वायु का दुर्गन्ध दूर होकर वह सुगन्धित, स्वास्थ्यप्रद व रोगनाशक हो जाती है। इस यज्ञ के परिणाम स्वरूप यज्ञ से पूर्व की वायु के गुणों में वृद्धि होकर वह स्वास्थ्यवर्धक, रोगनिवारक, वर्षाजल को शुद्ध करने वाली, प्रदुषण निवारक, वर्षा जल पर आश्रित अन्न व वनस्पतियों को स्वास्थ्यप्रद करने, यहां तक की यज्ञ व यज्ञ–वायु दोनों अच्छी सन्तानों को जन्म देने व उनमें सात्विक विचार उत्पन्न करने में भी सहायक होती है।

अग्निहोत्र यज्ञ करने के लिए हम घर में एक यज्ञकुण्ड वा हवनकुण्ड का प्रयोग करते है जो तली में छोटा व ऊपर की ओर बड़ा व खुले मुख वाला होता है। यह पूरा यज्ञ कुण्ड टीन, लोहे व ताम्बे का बना होता है। भूमि खोद कर भी यज्ञ कुण्ड बनाया जा सकता है। आम, पीपल, गुग्गल, कपूर व पलाश आदि अनेक प्रकार के स्वास्थ्य व पर्यावरण के हितकर काष्ठों की समिधाओं को यज्ञ कुण्ड के आकार में काट कर उन्हें यज्ञकुण्ड में रखा जाता है। कपूर को यज्ञ में प्रयुक्त घृताहुति वाली चम्मच में रखकर उसे दीपक के द्वारा प्रदीप्त किया जाता है। इस प्रक्रिया को करते हुए वेदमन्त्र को बोलकर अग्नि का आधान यज्ञकुण्ड के बीच समिधाओं में किया जाता है। जब अग्नि प्रज्जवलित हो जाती है तो यज्ञ के विधान के अनुसार परिवार का एक व अधिक सदस्य घृत की और कुछ हवन सामग्री वा साकल्य जिसका वर्णन ऊपर किया गया है, को लगभग पांच–पांच ग्राम या कुछ अधिक मात्रा में लेकर उसकी आहुतियां वेद मन्त्रों को बोलकर यज्ञ की अग्नि में डाली जाती हैं जिससे अग्नि में पड़ कर वह आहुतियां पूर्णतया जलकर व सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल जायें। जिन मन्त्रों को शुद्ध उच्चारित कर आहुतियां दी जाती हैं, उनके अन्त में स्वाहा बोला जाता है। मन्त्र बोलने का प्रयोजन यह है कि इससे यज्ञ करने के लाभ यजमान वा यज्ञकर्त्ता को विदित हो जाये और साथ ही उन मन्त्रों के कण्ठस्थ हो जाने से उनकी रक्षा व सुरक्षा हो सके। इस प्रकार न्यून से न्यून प्रतिदिन प्रातः व सायं सोलह–सोलह व अधिक आहुतियां देने का विधान हमारे पूर्वजों व ऋषियों ने किया है। इस प्रकार से यज्ञ अग्निहोत्र करने में मात्र 10 से 15 या अधिकतम 20 मिनट का समय लगता है। इस प्रक्रिया से वायुमण्डल शुद्ध हो जाता है। यज्ञ की गर्मी से घर का वायु हल्का होकर ऊपर व खिड़कियों–रोशनदानों से बाहर चला जाता है और बाहर का शुद्ध व हितकर वायु घर के अन्दर प्रवेश करता है। इससे घर में रहने वाले सभी सदस्यों का स्वास्थ्य अच्छा वा निरोग रहता है। परिवार के किसी भी सदस्य को रोग नहीं होते और यदि किसी कारण से हों भी जायें तो अल्प मात्रा में उपचार करने से वह शीघ्र ठीक हो जाते हैं। घृत एवं यज्ञ सामग्री के अनेक पदार्थ किटाणुनाशक भी हैं। यज्ञ करने से जल, वायु आदि में व घर में यत्र–तत्र जो सूक्ष्म हानिकारक किटाणु छिपे होते हैं, वह भी शुद्ध यज्ञवायु के प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं। शुद्ध वायु मिलने से मनुष्यों का स्वास्थ्य अच्छा होता है व उनके शरीर बलवान, रोगमुक्त व स्वस्थ होते हैं। यज्ञ करने के अनेक अदृश्य लाभ भी होते हैं जो यज्ञ में वेदमन्त्रों के द्वारा की जाने वाली प्रार्थनाओं के अनुरूप प्राप्त होते हैं। ऋषियों ने अपनी गवेषणा व अनुसंधान से यहां तक कहा कि यज्ञ करने वाले के अगले पुनर्जन्म में यह आहुतियां उसको अनेकविध लाभ पहुंचाती हैं। हमारी गवेषणा के अनुसार यह लाभ ईश्वर जीवात्मा को प्रदान करता है। यह जानना भी जरूरी है कि वेदमन्त्र ईश्वर के द्वारा प्रदत्त व निर्मित है। वेदों की कोई भी बात अज्ञान व असत्य नहीं है। वेदमन्त्रों में असम्भव प्रार्थनायें भी नहीं है जो उसके अनुरूप व्यवहार करने से पूर्ण वा सिद्ध न हों। वेद की प्रार्थनायें सत्य व ज्ञान से परिपूर्ण हैं। अतः वेदों में जो कहा गया है वह जीवन में अवश्य प्राप्त होता है अथवा वह सभी लाभ उसको प्राप्त होते हैं जो व्यक्ति यज्ञ को करता है। यह भी उल्लेखनीय है कि यज्ञ को करते समय जब यज्ञकुण्ड की अग्नि मन्द होने लगे तो उसमें आवश्यकतानुसार समिधायें रखते रहना चाहिये जिससे हमारी आहुतियां तेज वा प्रचण्ड अग्नि से सूक्ष्म होकर वायुमण्डल व आकाश में दूर–दूर तक पहुंचती रहे।

अब यज्ञ करने की विधि भी जान लेते हैं। प्रातःकाल यज्ञ से पूर्व तथा सायंकाल यज्ञ के पश्चात ''सन्ध्योपासना यज्ञ'' करने का विधान है। सन्ध्या का अर्थ है कि ईश्वर का भलीभांति ध्यान कर उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना। सन्ध्या की सर्वांगपूर्ण अति उत्तम विधि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पंच महायज्ञ विधि व संस्कार विधि पुस्तकों में प्रस्तुत की है। सन्ध्या के बाद तथा जब सूर्योदय हो गया हो, तब अग्निहोत्र किया जाता है। सबसे पहले गायत्री का मन्त्र का पाठ कर लेना चाहिये जिससे मन यज्ञ करते समय इधर–उधर न भागे और यज्ञ में ही एकाग्र रहे। इसके बाद तीन आचमन अर्थात् अल्प मात्रा में जल पीने का विधान है जो आचमन के मन्त्रों को बोलकर किये जाते हैं। इससे कफ आदि की निवृत्ति होकर वाणी का उच्चारण शुद्ध होता है। इसके पश्चात बायें हाथ की अंजलि में जल लेकर दायें हाथ की अंगुलियों से शरीरस्थ इन्द्रियों के स्पर्श करने का विधान है। इस प्रक्रिया द्वारा ईश्वर से इन्द्रियों व शरीर के स्वस्थ, निरोग व बलवान होने की प्रार्थना है। तत्पश्चात 8 स्तुति–प्रार्थना व उपासना के मन्त्रों का उनके अर्थ को विचार करते हुए या पृथक से बोलकर गायन वा उच्चारण करने का विधान है। इसके बाद दीपक जला कर उससे कपूर को प्रज्जवलित कर यज्ञ कुण्ड में उस कपूर की अग्नि का आधान मन्त्रों को बोलकर किया जाता है जो मात्र 25 से 30 सेकेण्ड्स में हो जाता है। अग्न्याधान के बाद चार मन्त्रों को बोलकर काष्ठ की 3 समिधायें प्रदीप्त अग्नि पर रखने का विधान है। इन समिधाओं का आकार लगभग 8 अंगुल की चौड़ाई जितना होना चाहिये। समिदाधान के बाद एक ही मन्त्र को पांच बार बोलकर घृत की आहुतियां दी जाती हैं। तत्पश्चात चारों दिशाओं में जल सिंचन का विधान है। यह सभी कार्य पृथक–पृथक मन्त्रों को बोल कर किये जातें हैं। जलसिंचन के बाद घृत की दो आघाराज्य व दो आज्यभाग आहुतियां दी जाती हैं।

इसके बाद दैनिक यज्ञ की आहुतियां दी जाती हैं। प्रातः काल की 12 आहुतियां एवं सायं काल की भी 12 आहुतियां हैं। इनके बाद यज्ञकर्त्ता यजमान यदि अधिक आहुति देना चाहें तो गायत्री मन्त्र को बोलकर देने का विधान है। इसके बाद पूर्णाहुति तीन बार 'ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।' बोलकर की जाती है। इससे पूर्व यदि यजमान स्विष्टकृदाहुति व प्राजापत्याहुति देना चाहे तो सम्बन्धित मन्त्रों को बोल कर दे सकते हैं। इस प्रकार से दैनिक यज्ञ सम्पन्न होता है। बहुत से लोग प्रातः व सायं यज्ञ न कर सायंकाल के 12 मन्त्रों को भी प्रातःकाल के यज्ञ की अहुतियों के बाद बोलकर यज्ञ में सम्मिलित कर आहुतियां दे देते हैं। इस प्रकार से यज्ञ पूर्ण हो जाता है। यज्ञ के बाद हिन्दी में 'यज्ञरूप प्रभो हमारे भाव उज्जवल कीजिए, छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए' यह यज्ञ प्रार्थना भी की जा सकती है और उसके बाद शान्तिपाठ का मन्त्र बोलकर यज्ञ समाप्त हो जाता है। यह अग्निहोत्र वा देवयज्ञ करने की विधि व विधान है। यह भी ध्यान रखना अत्यावश्यक है यज्ञ पूर्णतः अंहिसात्मक कर्म है, इसमें किंचित किसी प्राणी की हिंसा निषिद्ध है। ऐसा होने यज्ञ पर यज्ञ, यज्ञ न होकर पापकर्म बन जाता है।

सभी मनुष्य श्वास में मुख्यतः आक्सीजन लेते और कार्बन डाइआक्साइड गैस छोड़ते हैं। इससे वायु प्रदुषित होती है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने प्रयोजन से की गई दूषित वायु को शुद्ध करे। इसी प्रकार हम अपने निजी प्रयोजनो यथा भोजन पकाने, वस्त्र धोनें तथा मलमूत्र का विसर्जन करने आदि कार्यों से वायु सहित प्रकृति को भी प्रदूषित करते हैं। हमारा कर्तव्य है कि रोग व दुःखों से बचने व अन्यों को बचाने के लिए हम वायु, जल व प्रकृति को शुद्ध रखें व यज्ञ आदि क्रिया कर सबको शुद्ध करें। जो मनुष्य, स्त्री व पुरूष, ऐसा नहीं करते वह पाप के भागी होते हैं। यज्ञ न करना पाप करना है क्योंकि इससे हमारे द्वारा किये गये भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रदूषणों से अन्य प्राणियों को दुःख होता है। यदि मनुष्य इस जन्म व परजन्मों में सुखी होना चाहता है तो उसे यज्ञ अवश्य करना चाहिये। यज्ञ का अन्य कोई विकल्प नहीं है। यदि नहीं करेगा तो कालान्तर में परिणाम ईश्वर की व्यवस्था से इसके सम्मुख अवश्य आता है। इसके साथ ही यज्ञ करने से कर्ता को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष भी वंचित हो प्राप्त होते वा हो सकते हैं। धर्म की एक शब्द की एक परिभाषा है ''सत्याचरण''। सत्याचरण में माता–पिता की सेवा सुश्रुषा सहित प्राणिमात्र पर दया व उनके भोजन का प्रबन्ध करने के साथ, विद्वान अतिथियों की सेवा, उनसे सद्व्यवहार, उनका अन्न, धन,

(शेष पृष्ठ 4 पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 587वां वेबिनार सम्पन्न

आज के सन्दर्भ में दीपावली संदेश विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

दीपावली पर अज्ञानंधकार को दूर कर ज्ञान प्रकाश की ओर बढ़ें –अतुल सहगल
व्यक्ति के जीवन से दीप जलना चाहिए –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार, 06.11.2023 को केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्त्वावधान में 'आज के सन्दर्भ में दीपावली संदेश' विषय पर गोष्ठी संपन्न हुई।कोरोना काल से यह 586 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता अतुल सहगल ने सर्वप्रथम आज के सन्दर्भ में दीपावली संदेश विषय की भूमिका के रूप में बृहदारण्यक उपनिषद के पवमान मन्त्र को प्रस्तुत किया और सत्य व ज्ञानप्रकाश की महिमा बताई। वक्ता ने यह तथ्य सामने रखा कि सत्यज्ञान ही अमृत है और मनुष्य को मोक्षद्वार तक पंहुचाने का साधन है। दीपावली पर्व यही मुख्य सन्देश लेकर आता है कि मनुष्य अपने जीवन से तमस अर्थात असत्य को दूर करने में अधिक प्रयासरत हो जाए।वक्ता ने ईश्वर को परम सत्ता और परम सत्य कहते हुए अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाया।तत्पश्चात ज्ञान की महत्ता प्रकट की।अज्ञानता को मानव के लिए सबसे बड़ा अभिशाप बतलाया। दीपावली पर्व की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुए आप्त पुरुष श्रीराम के जीवन से सम्बद्ध घटना का उल्लेख किया कि किस प्रकार उनकी राजधानी अयोध्या में पुनः आगमन पर उनकी प्रजा ने दिए जलाकर उनका स्वागत किया था। उनका आगमन वास्तव में उनके प्रजाजनों के लिए ज्ञान का सूर्योदय था। मनुष्य अल्पज्ञ और अस्थिर ज्ञान वाला है।उसे विद्वानों और आप्त पुरुषों से मार्गदर्शन चाहिए।यदि आप्त पुरुष ही राजा हो तो प्रजा धन्य है। वक्ता ने पर्व के सन्देश को प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम जीवन से तमस हटाने का पुरुषार्थ करें।सत्य के स्थापना हेतु प्रचार,प्रसार तो करें ही,आसुरी शक्तियों के साथ युद्ध करने के लिए कमर कसकर तैयार रहें।वातावरण के प्रदूषण को दूर करने प्रयास करें।भ्रष्टाचार का प्रतिकार करें।पर्यावरण संरक्षण के लिए वैदिक विज्ञान पर आधारित प्रोद्योगिकी को विकसित करें।वेद विज्ञान पढ़ें और पढ़ाएं।वक्ता ने कहा कि इस पावन पर्व का मुख्य सन्देश यही है कि व्यवहारिक स्तर पर हम निर्भीक होकर अज्ञान,प्रदूषित ज्ञान,अर्द्धज्ञान और अविद्या को मिटाने का प्रयास करें।अन्याय, अत्याचार,अराजकता के विरुद्ध अभियान और आंदोलन चलाएं।अंत में वक्ता ने सन्देश दिया कि इस उत्सव को प्रतीक रूप में कम और यज्ञ का अनुष्ठान करके अधिक मनाएं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि व्यक्ति के जीवन में उसके कर्मो से सुगंध आनी चाहिए।यदि आपकी उपस्थिति मात्र से किसी को प्रसन्नता मिले यही आदर्श जीवन है।जो आपके पास है उसे समाज के लिए समर्पित कर देना चाहिए। मुख्य अतिथि चन्द्र कांता गेरा एवं अध्यक्ष ओम सपड़ा ने भी दीपावली पर्व के महत्व की चर्चा की तथा राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। गायिका चन्द्र कांता गेरा, रचना वर्मा, जनक अरोड़ा, रविन्द्र गुप्ता, कमला हंस, नीलम गुप्ता, सुनीता अरोड़ा, कमलेश चांदना, विजय खुल्लर, कौशल्या अरोड़ा आदि ने मधुर भजन प्रस्तुत किए।

'नारी उत्थान में महर्षि दयानंद का योगदान' गोष्ठी सम्पन्न

नारी उत्थान की क्रान्ति का शंखनाद महर्षि दयानंद ने किया –आचार्य श्रुति सेतिया

शुक्रवार, 3 नवम्बर 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'नारी उत्थान में महर्षि दयानंद का योगदान' विषय पर ऑनलाईन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 585 वां वेबिनार था। कार्यक्रम यूट्यूब चौनल आर्य युवक परिषद पर लाइव दिखाया गया। आचार्य श्रुति सेतिया ने कहा कि सर्वप्रथम महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने ही नारी उत्थान की क्रान्ति का शंखनाद किया। उन्होनें कहा कि स्वामी जी का मानना था कि जब तक नारी शिक्षित नहीं होगी तब तक जागरूक नहीं हो सकती। ऋषि ने वेदों की कुंजी स्त्रियों के लिए सुलभ करा दी। महाभारत काल के बाद पतन का दौर चला और नारी निरंतर पतन की ओर धकेल दी गई। पौराणिक और संकीर्ण विचारधारा से इसको और अधिक बल मिला।नारी को नर्क का द्वार जैसे विशेषण से विभूषित किया गया और इन सब का परिणाम यह हुआ कि औरत को पैर की जूती समझा जाने लगा। इस भारत भूमि पर देव दयानंद का आगमन उस समय हुआ जब नारी की अवस्था दयनीय थी।उन्होंने अनुभव कर लिया की स्त्री का उत्थान हुए बिना समाज अथवा राष्ट्र का उद्धार संभव नहीं,क्योंकि स्त्री भी पुरुष की भांति समाज रूपी गाड़ी का पहिया है।निसंदेह ऋषि ने नारी जागरण के लिए जिस वैचारिक और सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया और उस मिशन को आगे बढ़ाते हुए कन्या गुरुकुल एवम् गुरुकुलों का निर्माण किया,जिसके सुखद परिणाम हमारे सामने हैं।उन्होंने पर्दा प्रथा,सती प्रथा,बाल विवाह जैसी कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई।नारी का स्थान सर्वोपरि मानकर नारी के गौरव को सदा के लिए अक्षुण्ण बना दिया। पर जितने प्रयास किए जाने थे उतने नहीं हो पा रहे हैं।इनका सबसे बड़ा कारण यह है की साक्षर होते हुए भी नारी धार्मिक आडंबरों का शिकार अधिक है, आवश्यकता है धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने की ओर उसके अनुरूप आचरण करने की।एक बार फिर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी दयानंद के संदेश की संजीवनी शक्ति को सामाजिक जीवन में ग्रहण करने की अपेक्षा है। नारी जागरण के मर्म को विवेक के साथ व्याख्या की जरूरत है। स्वामी दयानंद तथा आर्य समाज ने नारी जाति के उत्थान के लिए जो कदम उठाए वो अतुलनीय हैं। संपूर्ण मानव जाति,आर्य समाज तथा स्वामी जी की सदैव ऋणी रहेगी। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री ऊषा सूद व अध्यक्ष विमला आहुजा ने भी महर्षि दयानंद जी के योगदान की चर्चा की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। गायिका चन्द्र कांता गेरा, रचना वर्मा, जनक अरोड़ा, रविन्द्र गुप्ता, कमला हंस, नीलम गुप्ता, सुनीता अरोड़ा, कमलेश चांदना, विजय खुल्लर, कौशल्या अरोड़ा आदि ने मधुर भजन प्रस्तुत किए।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

'दीया बाती और हम' पर गोष्ठी सम्पन्न

अंधकार में प्रकाश के दीप जलाये –आचार्य विमलेश बंसल

शुक्रवार,10 नवम्बर 2023, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'दीया बाती और हम' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 587 वाँ वेबीनार था। कार्यक्रम यूट्यूब पर प्रसारित किया गया। वैदिक विदुषी आचार्य विमलेश बंसल ने कहा कि व्यक्ति के जीवन से प्रकाश आना चाहिए। समाज के लिए भी कुछ करना चाहिए जहां अंधेरा है वहां प्रकाश यानी कि आशा की लो जलानी चाहिए यही मानव जीवन की सार्थकता है। उन्होंने कहा कि स्वयं माटी के दीप बन जाएं, प्रति घर जगमगाएं।दीपावली का पावन पर्व यह बतलाने के लिए आता है कि अंधकार में निराश मत होओ,आशा के दीप जलाओ, सर्वत्र प्रकाश कर महोत्सव मनाओ। वस्तुतः घोर घने अंधकार को प्रकाश द्वारा ही दूर किया जा सकता है। बाह्य अंधेरा हो, चाहे अंतरमन का अंधेरा हो अर्थात अविद्या हो, दोनों ही भौतिक और आध्यात्मिक प्रकाश से दूर किए जा सकते हैं। माध्यम बनता है दिया और बाती तथा उसमें पड़ा घृत।दिया जहां आश्रय बनता है प्रकाश का वहीं बाती बनती है जलने का माध्यम,तो तेल बनता है प्रज्वलित करने का साधन। उसी तरह हमारी आत्मा भी एक दिया है और शरीर बनता है जलने का माध्यम तथा प्रेम दया आदि सद्गुण बनते हैं शरीर को जीवंत रखने के साधन। व्यक्ति के भीतर ज्ञान प्रेम करुणा दया त्याग वृत्ति, सहनशीलता,सच्चरित्रता साहस आत्मविश्वास उसे बुझने नहीं देते, मिटने नहीं देते।उसी का जीवन धन्य है जो जीवन को इस तरह जीवंत बनाए रखता है अन्यथा तो मृत प्रायः है अर्थात् अंधकार से भरा हुआ है।पर्व का तो अर्थ ही होता है पोरी जैसे– गन्ने की गांठ में रस सुरक्षित रहता है एक पंगुली से दूसरी पंगूली को जोड़ रस भरने का कार्य ग्रंथि करती है ठीक उसी प्रकार से यह पर्व समाज की ग्रंथि होते हैं समाज के सभी वर्गों को जोड़ने,एक जुट करने,एक दूजे को गले लगा लेने, छुआछूत मिटाने, भेदभाव, विषमता और द्वेष मिटा कर निर्बल को भी गले लगाने, आश्रय बन ऊपर उठाने का कार्य करते हैं। हमारी संस्कृति को एक मजबूत आधार देते हैं। दीपावली का वैदिक स्वरूप यदि हम देखें तो वहां भी समरस समाज का शारदीय नवसस्येष्टि के रूप में वर्णन मिलता है एक कृषक अपनी अन्न की लहलहाती फसल रूपी लक्ष्मी द्वारा एक यज्ञ ही कर रहा होता है।और ईश्वर की संपदा को स्वयं होता अर्थात् दिया बन प्रथम आहुति यज्ञ के माध्यम से लगा हर वर्ग के तबके तक पहुंचाता है। समाज में फैली कुरीति अंधविश्वास पाखंड रूपी अज्ञान अमावस का हम छोटे छोटे ज्ञान पुंज दिए बन महर्षि दयानंद के निर्वाण दिवस पर सच्ची श्रद्धांजलि दें तथा ऋषि धनवंतरी जो आयुर्वेद के जनक थे उनसे स्वास्थ्य संपदा प्राप्त कर आरोग्य का वर्धन कर,यम नियमों का पालन कर रूपवान बनें। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री मधु खेड़ा व अध्यक्ष रजनी चुग ने भी मानव जीवन के कर्तव्यों पर संदेश दिया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पलवल में स्वामी श्रद्धानन्द प्रथम स्मृति दिवस सम्पन्न

वीरवार 9 नवम्बर 2023, आर्य युवक युवक परिषद हरियाणा के प्रधान स्वामी श्रद्धानंद जी की प्रथम पुण्य तिथि पर जाट धर्मशाला पलवल में स्मृति सभा का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी आर्यवेश जी, अनिल आर्य, स्वामी आदित्य वेश आदि अनेकों प्रबुद्ध लोगों ने अपने उद्गार व्यक्त किए। कुशल संचालन राजदेव शास्त्री ने किया। प्रिय मित्र को शत शत नमन। स्वामी प्रणवांनन्द जी ने अध्यक्षता की।

आर्य समाज महावीर नगर दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्ता दिनेश आर्य व द्वितीय चित्र मे रिषभ आर्य का अभिनंदन करते अनिल आर्य।
साथ मे सुरेश आर्य, लवली आर्य

(पृष्ठ 2 का शेष)

वस्त्र दान द्वारा सम्मान एवं यथासमय ईश्वरोपासना–सन्ध्या व अग्निहोत्र कल्याण के हितैषी सब मनुष्यों को अनिवार्य रूप से करना चाहिये। जो करेगा वह ईश्वर से इन कर्मों का लाभ व फल पायेगा और जो नहीं करेगा वह ईश्वरीय दण्ड का भागी होगा। यह हमने बहुत संक्षेप में अग्निहोत्र देव यज्ञ पर प्रकाश डाला है। यज्ञ पर बहुत साहित्य उपलब्ध है। यज्ञ सर्वश्रेष्ठ कर्म को कहते हैं। इसका अर्थ है देवों की पूजा, उनसे संगतिकरण और सबको पात्रतानुसार दान देना। इसके अनुसार माता–पिता–आचार्यों व विद्वानों का सम्मान व सेवा–सत्कार भी यज्ञ है। इनके साथ संगतिकरण कर उनके ज्ञान व अनुभव को प्राप्त करना और उससे जनकल्याण व प्राणियों का हित करना भी यज्ञ है। इसी प्रकार से अपनी सामर्थ्यानुसार सुपात्रों को अधिक से अधिक दान देकर देश व समाज को समरस, एकरस व गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार यथाशक्ति सुख–सुविधायें प्रदान करना भी यज्ञ के अन्तर्गत आता है। लेख को समाप्त करने पर यह अवगत कराना है कि इस लेख में स्थानाभाव के कारण हम यज्ञ के मन्त्रों को प्रस्तुत नहीं कर सके हैं। इसके लिए पाठक नैट पर उपलब्ध पुस्तक को डाउनलोड कर सकते हैं या आर्यसमाज के पुस्तक विक्रेताओं से क्रय कर सकते हैं। मार्गदर्शन हेतु यूट्यूब पर उपलब्ध वीडियोज् को भी देखा जा सकता है। इसी के साथ हम इस संक्षिप्त लेख को विराम देते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.:** 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970